कहानी का नाम. दिव्यांगता

विद्यालय का नाम	-	शासकीय एकीकृत माध्यमिक विद्यालय सिंधी खोदरी
प्रधान पाठक का नाम	-	सुश्री नेहा दुबे
शाला यू डाइस	-	23280303815
जिला	-	बड़वानी
विकासखंड	-	बड़वानी
संकुल	-	शासकीय उमावि बालकुआं
राज्य	-	मध्य प्रदेश
संपर्क	-	9617092946
ईमेल	-	neh1a@rediffmail.com

<u>विद्यालय का फोटो</u>

पृष्ठभूमि

इस कहानी को लिखने की प्रेरणा मध्य प्रदेश लीडरशिप अकादमी सीमेट भोपाल द्वारा प्राप्त होती है। अतः इस कहानी को पढ़ने सुनने व समझने वाले सभी महानुभावों को सादर प्रणाम।

यह कहानी बहुत ही सरल है सच कहूं तो मैंने कभी सोचा नहीं था कि मैं इस कहानी को कभी प्रेषित करूंगी और शायद इसी कारण मैं इस कहानी पर आधारित अधिक साक्ष्य तैयार नहीं कर पाईजैसे वीडियो आदि, परंतु CAC महोदय द्वारा निर्देशित करने पर कहानी प्रेषित करनी थी। हो सकता है मेरी यह छोटी सी कहानी किसी शिक्षक, किसी विद्यार्थी, किसी पालक के लिए मददगार हो या उन्हें इससे प्रेरणा मिले ।

प्रकृति के सौंदर्य से परिपूर्ण धरती का एक बहुत ही छोटा सा हिस्सा ग्राम सिंधी खोदरी जो बड़वानी जिले में स्थित है। जहां सर्वप्रथम मात्र 17 बच्चों से कक्षा छठी में नामांकन के साथ ही माध्यमिक शाला की स्थापना वर्ष 2014 में हुई। उसके पश्चात प्राथमिक व माध्यमिक शाला पास पास संचालित होने से शासन के निर्देशानुसार इस माध्यमिक शाला ने एकीकृत शासकीय माध्यमिक विद्यालय सिंधी खोदरी का रूप ले लिया। वर्तमान सत्र 2025 - 26 में शाला में 64 बच्चे नामांकित है और संस्था में एक से आठ तक कक्षाएं संचालित है, भौगोलिक दृष्टि से देखे तो संस्था एक छोटे से गांव में स्थित है। लगभग तीन किलोमीटर पर शहीद भीमा नायक प्रेरणा केंद्र स्थित है गांव में पास ही एक बड़ा सा तालाब और पहाड़ है। चारों तरफ खेत हरियाली फैली हुई है ग्राम सिंधी खोदरी पोस्ट बालकुआं से लगभग20 किलोमीटर पर मां नर्मदा बड़ी ही सौम्यता से संपूर्ण जिले को सींच रही है।

<u>समस्या</u>

सामान्यतः अन्य शालाओं की तरह एकीकृत माध्यमिक विद्यालय सिंधी खोडरी में भी बहुत सी समस्याएं हैं। लेकिन सफलता की इस कहानी के माध्यम से शाला की एक सामान्य परंतु विशिष्ट समस्या पर प्रकाश डाला जा रहा है चूंकि प्रायः शाला में या तो यह समस्या नहीं है या है तो बहुत कम या यूँ कहें कि बहुत बार सामान्य स्कूलों में शिक्षकों द्वारा इस समस्या को एक विशेष समस्या के रूप में माना नहीं जाता है। जी हाँ, हम बात कर रहे हैं दिव्यांगता की शाला में दर्ज दिव्यांग बच्चों की क्योंकि इनकी संख्या बहुत कम होती है, इसलिए इस पर बहुत अधिक ध्यान नहीं दिया जाता।

इस समस्या की पहचान शाला के दो शिक्षकों सुश्री नेहा दुबे तथा सचिन वाणी द्वारा तब गंभीरता से तब की गई प्रशस्त ऐप पर शाला में नामांकित विद्यार्थियों की एंट्री की जाना थी। प्रपत्र पर कार्य करते-करते शिक्षिका ने पाया की शाला में दर्ज बच्चों में से कुछ बच्चे दिव्यांग है और समस्या थी कि दिव्यांग बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ पढ़ना, क्योंकि दिव्यांग बच्चों को पढ़ाने के लिए उपयुक्त संसाधन तथा शिक्षक शाला में होना चाहिए। जो कि वर्तमान में प्रत्येक शाला में उपलब्ध नहीं है फिर विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को कैसे पढ़ाया जाए।

विगत 5 वर्षों से बालिका रेखा मंशाराम तथा बालक महेंद्र किशन शाला में दर्ज है। वर्तमान में कक्षा छठी में दोनों ही बच्चे दर्ज है। जब प्रधान पाठिका कक्षा छठी मे अध्यापन हेतु जाती तो महसूस करती की इन दोनों बच्चों को चाह कर भी सामान्य बच्चों की तरह नहीं पढ़ पा रही हैं। बस यही से शुरू होती है समस्या समाधान की प्रक्रिया।

समस्या समाधान की प्रक्रिया

जब भी प्रधान पाठिका कक्षा में अध्यापन हेतु जाती दोनों ही बच्चों को शांति से निहारती और महसूस करती कि वह इन दोनों दिव्यांग बच्चों के साथ न्याय नहीं कर पा रही है तब प्रधान पाठिका का ने इन बच्चों को अलग से पढ़ाना चाहा। परंतु यह समाधान काम नहीं कर पाया क्योंकि बच्चे बहू विकलांग थे और प्रधान पाठिका दिव्यांग बच्चों को पढ़ने हेतु प्रशिक्षित नहीं थी।

तब उन्होंने सोचा क्यूँ ना इन बच्चों को विशेष संस्था से जोड़ा जाए परंतु यह इतना भी आसान न था। क्योंकि बच्चों के पास दिव्यांगता प्रमाण पत्र भी नहीं था और ना ही पालक इस और कोई ध्यान दे रहे थे।

तब प्रधान पाठिका ने सर्वप्रथम बच्चों के दिव्यंका प्रमाण पत्र बनवाने का निर्णय लिया इसके लिए सबसे पहले पालक से बात कर समझाया और शासन द्वारा दिए जा रहे लाभ की जानकारी दी जिससे एक पालक तो प्रेरित होकर अपने बच्चें का दिव्यांग प्रमाण पत्र बनवाने में जुट गए परंतु बालिका रेखा कन्नौजे के पिता मंशाराम समझने के बाद भी इस कार्य हेतु रुचि नहीं दिख रहे थे। पिता मंशाराम को शाला के अन्य शिक्षकों ने घर जाकर संपर्क किया।

समझाया पर पालक मन में ठान चुके थे कि दिव्यांग बालिका का कुछ नहीं हो सकता फिर प्रधान पाठिका द्वारा बालिका की माता को समझाया गया। तब पालक जिला चिकित्सालय में निर्धारित दिनांक को जाने हेतु तैयार हुए। जिला चिकित्सालय में परीक्षण के उपरांत ज्ञात हुआ बालिका बहू विकलांग है और कुछ परीक्षण बाहर जाकर भी करवाने होंगे।

इसी के साथ-साथ प्रधान पाठिका ने जिले से संपर्क कर दिव्यांग बच्चों हेतु शासन द्वारा संचालित संस्थानों की जानकारी एकत्रित करना शुरू कर दी। इस कार्य में उनका सहयोग जिला दिव्यांगता

प्रभारी श्री निरवेल जी ने किया। श्री निरवेल ने ना सिर्फ जिले में संचालित संस्थानों की जानकारी दी अपितु पलकों को अपने स्तर से समझाया भी और कभी-कभी स्वास्थ्य परीक्षण हेतु उपस्थित भी हुए। बहुत मेहनत के बाद बच्चों का दिव्यांगता प्रमाण पत्र बनाकर तैयार था, किंतु समस्या का अगला पड़ाव यहां से शुरू होता है। क्योंकि दिव्यांग बच्चों का पलकों की चिंता और स्नेह से गहरा संबंध है अब उन बच्चों को पलकों से दूर आवासीय संस्था में दर्ज किया जाना था। संस्था की जानकारी निकालने पर ज्ञात हुआ कि जिले में बालिकाओं हेतु तो एक छात्रावास है, परंतु दिव्यांग बालको हेतु पूर्ण शासकीय संस्था जिले में नहीं हैं। प्रधान पाठिका द्वारा जिला खरगोन के APC महोदय श्री सोलंकी जी से दिव्यांग बालक को खरगोन जिले में संचालित दिव्यांग छात्रावास मैं प्रवेश हेतु निवेदन किया गया और श्री सोलंकी जी द्वारा सहमति दे दी गई। अब समस्या का अगला पड़ाव था पलकों को भरोसा दिलाना कि शासन द्वारा संचालित दिव्यांग छात्रावासों में बच्चे पूर्णत सुरक्षित है। साथ ही वहां बच्चों को आवश्यकता अनुसार शिक्षण विधियां और संसाधनों की उपलब्धता होगी पलकों की संतुष्टि हेतु पालकों को छात्रावासों का दो बार भ्रमण करवाया गया।

<u>बदलाव</u>

कड़ी मेहनत व सतत प्रयास करने पर बदलाव देखा गया। पालक दोनों बच्चों को दिव्यांग छात्रावास में प्रवेश दिलाने हेतु सहमत थे इस प्रकार यह एक स्थिर बदलाव है। अब माध्यमिक स्तर पर दोनों ही बच्चों को शासन द्वारा प्रदत्त योजनाओं का लाभ पूर्णतः प्राप्त हो सकेगा सम्भवतः दोनों ही बच्चों का भविष्य उज्जवल होगा। बच्चे दिव्यांगता अनुसार शिक्षण, संसाधन, तथा शिक्षक प्राप्त कर सकेंगे। वर्तमान में दोनों बच्चे छात्रावास में निवासरत है।

आगामी योजना

प्रधान पाठिका द्वारा योजना बनाई गई है कि वह स्वयं विशेष आवश्यकता आधारित बच्चों को अध्यापन कराने हेतु शासन द्वारा दिया जाने वाला प्रशिक्षण प्राप्त करें। ताकि भविष्य में विपरीत परिस्थितियों में या शाला में विशेष शिक्षक नहीं होने पर भी दिव्यांग बच्चों को पढ़ा सके। किसी भी कारण से शाला में दर्ज दिव्यांग बच्चों की पढ़ाई ना रुके।

आभार

मैं आभार प्रेषित करती हूं जिले के समस्त अधिकारी महोदय को मैं आभार प्रकट करना चाहती हूँ आदरणीय प्राचार्य महोदया डॉक्टर साधना भंवर मेम का उनके द्वारा समय-समय पर हमें मार्गदर्शन प्रदान होता है। विनम्र आभार है जिला खरगोन के APC श्री सोलंकी जी को, मैं आभारी हूं इस संपूर्ण कार्य में सहज ही सहयोग करने वाले श्री निरवेल जी की, मैं आभार प्रकट करती हूँ बड़वानी ब्लाक की बीआरसी महोदया श्रीमती सुनीता मोरे जी एवं बीएससी श्रीमान सुनील मुकाती जी को मैं आभारी हूँ संकुल प्राचार्य महोदय श्री जयंत शिंदे सर तथा जन शिक्षा कैंद्र प्रभारी श्री देवेन्द्र सेप्टा सर की जो बड़ी ही सरलता से उत्तम कार्य हेतु हमारा

एकीकृत शा. मा. वि. सिंधी खोदरी